



बागवानी और रोजगार के अवसर: पहाड़ी अर्थव्यवस्था की रीढ़

डॉ. रजनीश ठाकुर

माता गुजरी कॉलेज, फतेहगढ़ साहिब, पंजाब, भारत

संवादी लेखक का ईमेल पता: rjthakur579@gmail.com

पहाड़ी क्षेत्रों में खेती मैदानी क्षेत्रों से अलग परिस्थितियों में होती है। ढलानदार भूमि, छोटे खेत, सीमित सिंचाई, कठिन परिवहन और मौसम की अनिश्चितता किसानों के सामने कई चुनौतियाँ पैदा करती हैं। ऐसे क्षेत्रों में बागवानी फसलें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अधिक विविध बनाने का महत्वपूर्ण साधन हो सकती हैं। फल, सब्जियाँ, फूल, मसाले, औषधीय और सुगंधित पौधे तथा अन्य उच्च मूल्य वाली फसलें अलग-अलग ऊँचाई और जलवायु वाले क्षेत्रों में उगाई जा सकती हैं। बागवानी का महत्व केवल खेत की उपज तक सीमित नहीं है; इससे रोपण सामग्री, कटाई, छँटाई, पैकिंग, परिवहन और प्रसंस्करण में भी रोजगार बन सकता है।

पहाड़ी क्षेत्रों के लिए बागवानी की उपयोगिता

छोटे और बिखरे खेतों में ऐसी फसलें उपयोगी हो सकती हैं जिनसे प्रति इकाई भूमि अधिक आर्थिक मूल्य प्राप्त हो। सेब, नाशपाती, अखरोट, कीवी, बेर, आलूबुखारा, ऑफ-सीजन सब्जियाँ, मसाले और फूल कई पहाड़ी क्षेत्रों में संभावनाएँ रखते हैं। बागवानी फसलों की एक विशेषता यह है कि इनके आसपास पूरी मूल्य श्रृंखला विकसित हो सकती है। पौधशाला से लेकर फल उत्पादन, तुड़ाई, छँटाई, पैकिंग, भंडारण, परिवहन और बिक्री तक अनेक गतिविधियों में स्थानीय लोगों को काम मिल सकता है।

रोजगार के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अवसर

प्रत्यक्ष रोजगार में पौध तैयार करना, बाग लगाना, छँटाई, सिंचाई, रोग प्रबंधन और फल तोड़ना शामिल है। अप्रत्यक्ष रोजगार में पैकिंग, परिवहन, भंडारण, प्रसंस्करण, विपणन और कृषि सलाह जैसी गतिविधियाँ आती हैं। महिलाओं और युवाओं के लिए मूल्यवर्धित उत्पादों में अवसर पैदा हो सकते हैं। स्थानीय फल से सूखे उत्पाद, अचार, रस, जैम और अन्य खाद्य पदार्थ बनाए जा सकते हैं। यदि स्वच्छता, पैकेजिंग और बाजार की आवश्यकताओं का पालन किया जाए तो छोटे उद्यम विकसित किए जा सकते हैं।



जलवायु परिवर्तन की चुनौती

पहाड़ी बागवानी तापमान में बदलाव, अनियमित वर्षा, बर्फबारी में कमी, सूखे की स्थिति, अत्यधिक वर्षा और नए कीट एवं रोगों से प्रभावित हो सकती है। इसलिए केवल पुरानी कृषि पद्धतियों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। जलवायु के अनुकूल किस्मों, पानी की बचत, मलच, संरक्षित खेती, मौसम संबंधी जानकारी और समेकित कीट प्रबंधन उपयोगी हो सकते हैं। पुराने बागों का सुधार और बेहतर रोपण सामग्री भी उत्पादन बढ़ाने में सहायता कर सकती है।

बाजार और मूल्यवर्धन

पहाड़ी उत्पादों की एक बड़ी समस्या बाजार तक पहुँच है। लंबी दूरी और कठिन रास्तों के कारण परिवहन खर्च बढ़ सकता है। जल्दी खराब होने वाले फलों और सब्जियों के लिए ठंडे भंडारण और समय पर परिवहन की जरूरत होती है। किसान उत्पादक संगठन, सहकारी समितियाँ और स्थानीय संग्रह केंद्र किसानों को सामूहिक रूप से बाजार से जोड़ सकते हैं। छँटाई और एक जैसी पैकिंग से गुणवत्ता पहचान बेहतर हो सकती है। ताजा फल के साथ प्रसंस्कृत और सूखे उत्पादों का विकास भी आय के अवसर बढ़ा सकता है।

पर्यटन और बागवानी का संबंध

पहाड़ी क्षेत्रों में बागवानी को पर्यटन से जोड़कर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है। बाग भ्रमण, खेत पर ठहरने की व्यवस्था, स्थानीय भोजन, फूल प्रदर्शन और स्थानीय उत्पादों के बाजार इसके उदाहरण हैं। हालांकि पर्यटन का विकास स्थानीय पानी, पर्यावरण और संस्कृति पर अतिरिक्त दबाव न डाले, इसका ध्यान रखना आवश्यक है। स्थानीय समुदाय की भागीदारी और संसाधनों का संतुलित उपयोग इस तरह के मॉडल की सफलता के लिए जरूरी है।

युवाओं की भूमिका

यदि बागवानी को केवल पारंपरिक खेती के रूप में देखा जाएगा तो युवाओं की रुचि सीमित रह सकती है। लेकिन पौधशाला व्यवसाय, कृषि यंत्र, डिजिटल विपणन, खाद्य प्रसंस्करण, सटीक खेती और कृषि पर्यटन जैसे क्षेत्रों से जोड़ने पर यह आधुनिक उद्यम का रूप ले सकती है। कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र, अनुसंधान संस्थान, किसान संगठन और स्थानीय प्रशासन मिलकर युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चला सकते हैं। छंटाई, पौध तैयार करना, प्रसंस्करण, पैकिंग और बाजार प्रबंधन जैसे कौशल रोजगार बढ़ा सकते हैं।

भविष्य की दिशा

पहाड़ी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। अच्छी रोपण सामग्री, जल संरक्षण, बागों का सुधार, कटाई के बाद प्रबंधन, भंडारण, परिवहन, बाजार और स्थानीय प्रसंस्करण को एक साथ विकसित करना होगा। यदि स्थानीय जलवायु और बाजार के अनुसार फसल का चयन किया जाए और किसानों को तकनीकी तथा आर्थिक सहायता मिले, तो बागवानी ग्रामीण परिवारों की आय में स्थिरता ला सकती है।

निष्कर्ष

पहाड़ी क्षेत्रों में बागवानी खेती से आगे बढ़कर रोजगार, उद्यमिता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बन सकती है। इसके लिए फसल उत्पादन के साथ पौधशाला, मूल्यवर्धन, बाजार संपर्क, जलवायु अनुकूलन और कौशल विकास पर ध्यान देना जरूरी है। स्थानीय संसाधनों और किसानों की जरूरतों के अनुसार बनाई गई योजनाएँ पहाड़ी युवाओं और परिवारों के लिए नए अवसर पैदा कर सकती हैं।